किशोरावस्था

बालविकास की अवस्थाओं में बाल्यावस्था के बाद किशोरावस्था प्रारम्भ होता है। तथा प्रौढ़ावस्था के प्रारम्भ होने तक चलता है। इ जीवन का सबसे कठिन काल भी कहा जाता है। यह बालविकास तीसरी अवस्था है। यह अवस्था 12 वर्ष से 18 वर्ष तक होती है। किशोरावस्था को अंग्रेजी में Adolescence कहते है। Adolescence लैटिन भाषा के Adolescere से बना है जिस तात्पर्य होता है "परिपक्वता की ओर बढ़ना"

अत: किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमे बालक परिपक्वता की बढ़ता है। तथा जिसकी समाप्ति पर बलपूर्ण परिपक्व व्यक्ति बन जाता है। इस अवस्था में हड्डियों में दृहता आती है तथा अत्यधिक का अनुभव लगता है। बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में किशोरा का आरम्भ दो वर्ष पूर्व हो जाता है।

स्टनले हाल ने "किशोरावस्था को बड़े संघर्ष,तूफ़ान तथा विरोध अवस्था कहा है।"क्योंकि इस आयु में विकासशील बालक अपने हो रहे परिवर्तन से हैरान तथा परेशान रहता है। अर्थात यह जीवन सबसे कठिन काल है। इसमें बालक बाल्यावस्था तथा पौढ़ावस्था मध्य अर्थात दोनों अवस्थाओं में रहता है इसलिए इसे संधि काल कहा जाता है।

किशोरावस्था की कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ

रॉस – "किशोरावस्था, शैशवावस्था की पुनरावृत्ति है।"

क्रो एण्ड क्रो – "किशोर ही वर्तमान की शक्ति और भावी आशा को प्रस्तुत करता है।"

कुल्हन – "किशोरावस्था,बाल्यकाल तथा पौढ़ावस्था के मध्य का संक्रान्ति काल है।"

किलपैट्रिक – "किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।"

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने किशोरावस्था को दो भागो में बाँटा है जो निम्न है –

1. पूर्व किशोरावस्था (12 से 16 वर्ष तक)
2. उत्तर किशोरावस्था (17 से 19 वर्ष तक)

17 – वर्ष की आयु को दोनों का विभाजन विन्दु माना जाता है।

हरलॉक के अनुसार, "पूर्व और उत्तर बाल्यावस्था के मध्य की विभाजन रेखा लगभग 17 – वर्ष की आयु के पास है।"

पूर्व किशोरावस्था को अत्यंत द्रुत एवं तीव्र विकास का काल भी कहा जाता है। क्योंकि शारीरिक विकास के साथ साथ इस समय में शारीरिक विकास के सभी पक्षों में तेजी आ जाती है। पूर्व किशोरावस्था को एक बड़ी उलझन की अवस्था कहा गया है। क्योंकि

इस समय में माता-पिता,अभिभावक तथा शिक्षक उसे बात बात पर डाटते,रोकते व टोकते रहते है। वह सदैव उलझन पूर्ण स्थिति में रहता है। कि वह क्या करे क्या न करे।

स्टनले हॉल ने “पूर्व किशोरावस्था को एक अत्यंत संवेदात्मक उथल-पुथल झंझा और तनाव की अवस्था कहा जाता है।”

किशोरावस्था के विकास के सिद्धांत

किशोरावस्था के विकास के दो सिद्धांत है-

त्वरित विकास का सिद्धांत

इस सिद्धांत का समर्थन स्टैलने हाल ने अपनी पुस्तक एडोलसेंस में किया है इनका कहना कहना है कि किशोरों में अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन आकस्मिक रूप से होता है। जिनका शैशवावस्था व बाल्यावस्था से कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

स्टेनले हॉल के शब्दों में,”किशोर अथवा किशोरी में जो शारीरिक मानसिक परिवर्तन होते है वह एकदम छलांग मारकर आते है।”

क्रमित विकास का सिद्धांत

इस सिद्धांत के समर्थक थार्नडाइक,किंग और हालिंगवर्थ है जिनका मानना है कि किशोरावस्था में मानसिक शारीरिक तथा संवेदात्मक परिवर्तन के फलस्वरूप जो नवीनताएँ दिखाई देती है वे एकदम न आकर धीरे धीरे क्रमशः आती है।

किशोरावस्था की विशेषताएँ

किशोरावस्था को जीवन का परिवर्तन काल,बसंत काल एवं अप्रसन्नता का काल भी कहा जाता है। किशोरावस्था की विशेषताएँ निम्नलिखित है –

शारीरिक विकास

किशोरावस्था को शारीरिक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्पूर्ण काल मन जाता है। इस काल में किशोर तथा किशोरियों में कुछ ऐसे महत्वपूर्ण शारीरिक परिवर्तन होते है जो यौवन आरम्भ होने के लक्षण होते है। इस अवस्था में किशोरियाँ स्त्रीत्व को तथा पुरुष पुरुषत्व को प्राप्त करते है। भार व लम्बाई में तीव्र वृद्धि होती है किशोरों में दाढ़ी व मोछ की रोमावली दृष्टिगोचर होने लगाती है। वे अपने शरीर,रंग,रूप तथा स्वरूप के प्रति अधिक सजक रहते है। किशोर स्वस्थ,सबल तथा उत्साही बनने का प्रयास करते है जबकि किशोरियाँ अपनी आकृति को नारी सुलभ आकर्षण प्रदान करने की इच्छुक रहती है।

बौद्धिक विकास

किशोरावस्था में बुद्धि का सबसे अधिक विकास होता है। किशोर-किशोरियों में परस्पर विरोधी मानसिक दशाएँ प्रालक्षित होने लगाती है। मानसिक जिज्ञासा का विकास हो जाता है वह सामाजिक,आर्थिक,नैतिक तथा अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं में रूचि लेने लगता है।

अपराध प्रवृति का विकास

इस अवस्था में इच्छापूर्ति,निर्वाधा तथा असफलता मिलने के कारण अपराध प्रवृत्ति का विकास हो जाता है। वैलेंटाइन के अनुसार, “किशोरावस्था अपराध प्रवृत्ति के विकास का नाजुक समय है।”

काम भावना का विकास

किशोरावस्था की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता काम इन्द्रियों की परिपक्वता तथा काम प्रवृत्ति की क्रियाशीलता है। शैशवावस्था का दबा हुआ यौन आवेश जो बाल्यावस्था में शुप्त अवस्था में रहता है पुनः जागृत हो जाता है। किशोर व किशोरियों में तीन बातें दिखाई देती है। स्वप्रेम,समलिंगी कामोक्ता और विषमलिंगी कामोक्ता।